8. व्याख्यान विधि (Lecture Method)—जेम्स एम. ली ने लिखा है—"व्याख्यान एक शिक्षण-शास्त्रीय विधि है जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है।"

रिस्क के विचारानुसार, "व्याख्यान तथ्यों, सिद्धान्तों या अन्य सम्बन्धों का प्रतिपादन है जिनको शिक्षक अपने सुनने वालों को समझाना चाहता है।"

एक विधि के रूप में यह विधि यह मानकर चलती है कि सीखने वाला भाषण तथा इंगित किये सम्बन्धी को समझने की योग्यता रखता है। जेम्स एम. ली का कथन है कि व्याख्यान विधि को निर्देश या कथन प्रविधि से नहीं मिलना चाहिए। निर्देश द्वारा शिक्षक किसी मुख्य सूचना को प्रदान करता है जो छात्रों को अपने शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक होती है। कथन अपने रूप में संक्षिप्त होता है जबकि व्याख्यान काफी बड़ा। व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य तथ्यों तथा धारणाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रतिपादित करना है।

व्याख्यान विधि के गुण एवं दोष (Merits and Demerits of Lecture Method) :

गुण :

1. इसके द्वारा विषय-वस्तु को क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप से प्रस्तुत किया जाता है जिससे छात्र सरलता से समझ सकें।

2. यह कम से कम समय में विषय-वस्तु को पूरा करने में सहायक है। साथ ही यह शैक्षिक कुशलता को उत्पन्न करती है।

3. यह छात्रों को सुनने की कला में प्रशिक्षित करती है।

4. इसके द्वारा विषय-वस्तु में निहित सम्बन्धों पर छात्रों के ध्यान को आकृष्ट किया जाता है।

5. यह असंगत तथ्यों की अवहेलना करके छात्रों का संगत तथ्यों को ग्रहण कराने में सहायक है।

दोष :

1. यह छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में निष्क्रिय श्रोता बनाती है।

2. यह शिक्षक-केन्द्रित विधि है जबकि आधुनिक शिक्षा बाल-केन्द्रित शिक्षा पर बल दे रही है।

Scanned by CamScanner

3. इसमें समय का अपव्यय होता है क्योंकि बालक निष्क्रिय श्रोता के रूप में बहुत कम ग्रहण कर पाता है। शिक्षक की तैयारी भी व्यर्थ हो जाती है।

4. यह इस बात की कोई गारण्टी नहीं देता है कि छात्र व्याख्यान द्वारा दी गई विषय-वस्तु को समझ लेंगे।

5. छात्रों में लापरवाही उत्पन्न करने के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करती है।

सुझाव (Suggestions)—व्याख्यान-विधि को छात्रोपयोगी बनाने के लिए निम्नलिखित सुझावों पर ध्यान देना आवश्यक है—

1. व्याख्यान नियोजित होना आवश्यक है।
2. यह किसी एक केन्द्रीय विचार या समस्या या प्रकरण पर आधारित होना चाहिए।
3. शिक्षक को रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
4. यह हाव-भावयुक्त ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
5. इसमें मौखिक उदाहरणों तथा शाब्दिक चित्रों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाय
6. यह मध्यम गति से प्रस्तुत किया जाय।

Scanned by CamScanner